CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust Foundation / Muthulakshmi Research Academy and eGangotri

महर्षि उपमन्यु वंश - का इतिहास

यमुनानारायण अवस्थी स्थान - बदरका

प्रान्त - उन्नाव

5

ative central production, equipand supplies and (ii) have comstaff, management, editorial ther services or a combination y of them?

Please examine the operation ltiple units, groups, chains and ues with reference to:

presentation by them of accunews and fair and adequate deterioration, ma

the papers a ation in groups, an distinctive effect on efficiency.

the economic advantages or antages of the existence of chain, etc., to the press as a (including reduction or augion of financial risks, flow of into the newspaper industry version of the capital and reof the newspaper industry to trade or other business);

the effect on conditions of ement of working journalists and employees of the newspaper in-

the influence on Government tors of multiple units,

and said that this protection had been extended up to the end of this year.

The Government, he added, were anxious that the sericulture industry should stabilise itself and obviate the need for importing foreign silk. The protection offered to sericulture had been of a substantial nature and they had to reach their goal of comparable efficiency in production as early as possible.

journals to unfair competition from foreign publications and agencies? Would you suggest any special methods to promote the growth of such journals?

(b) Do you think that there is greater independence and maintenance of professional standards in the weeklies and other periodicals as compared to the daily press? To what extent has the growth of multiple units, groups, chains and combines affected the financial stability of such independent weeklies and periodicals, especially as result of the publication of Sunday editions,

duction and the inte

was estimated at two milli

imports during 1951 reache

pounds only. In 1952, t

amounted to 3,09,377 pou

up to October. No impo

were issued during the pe

December, 1952. During t

period also, only a very lim

tity might come in.—PTI.

King-size.
Gives sovereig
value for mone
Your baths wi
convince yo

Other Godrej Quali
Products: Hair Tonic —
de Cologne—Shaving

CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

उपमन्यु ऋषि-वंश वर्णन

CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust and eGangotri

गोपीनाथ की द्वितीय स्त्री से पुत्र ५, शंकू १, राजऊ २, कर्ण ३, विद्याधर ४, कामदेव ५।

शंकू

राजऊ के पुत्र १, कुशानु १।

कुशानु के पुत्र २, लोल १, पराशर २।

कर्ण

विद्याधर के पुत्र नगाई आदि हुए। इन्हें राजा ने 'ब्रह्म' की पदवी दी थी। उत्कल (उड़ीसा) में कुछ लोग 'ब्रह्म' की पदवी से भूषित हैं।

कामदेव - इन की कामदैवी पद्धति प्रसिद्ध थी।

जाना पाठक के द्वितीय पुत्र गदाधर के पुत्र ४, अनिरुद्ध १, गोविन्द २, पद्मनाभ ३, विटू ४।

उपमन्यु वंश का इतिहास

अनिरुद्ध, गोविन्द, पद्मनाभ, विट्

यह चारों भाई स्थान - वैजुग्रामऊ प्रान्त -

- और स्थान - नसुरा - प्रान्त -

में गये, और जानापुरि पाठक कहाये।

उद्याम के द्वितीय पुत्र सुमुख त्रिवेदी के पुत्र १,

रामेश्वर १।

रामेश्वर के पुत्र १, वेणु १।

वेणु के पुत्र १, पयोधर १।

पयोधर के पुत्र १, वसन्त १।

वसन्त के पुत्र १, भार्गव १।

भार्गव के पुत्र १, जगानेश्वर १।

जगानेश्वर के पुत्र १, मुरलीधर १।

मुरलीधर के पुत्र १, जानकीनाथ १।

जानँकीनाथ के पुत्र १, सुवंशा १।

सुवंशा के पुत्र १, वाणीप्रसाद १।

सुमुख त्रिवेदी वश वर्णन

वाणीप्रसाद के पुत्र १, श्रीमान् दामोदर १।

श्रीमान् दामोदर के पुत्र ४, प्रयाग १, मंडन २, वादें ३, साहव ४।

प्रयाग के पुत्र २, हरि १, रघुनाथ २।

हरि के पुत्र ६, आत्माराम १, पुरंदर २, हीरा ३, वदाम ४, श्याम ५, माणिक ६।

आत्माराम, पुन्दर, हीरा, वदाम, श्याम, माणिक यह सब भाई स्थान-एकडला-प्रान्त-फतेहपुर हरि के त्रिवेदी प्रसिद्ध हुए।

उद्यम के तृतीय पुत्र दुर्वल पाठक के पुत्र १ शिववर्ण १।

शिववर्ण के पुत्र १, सव्य १।

सव्य के पुत्र १, रूप १।

रूप के पुत्र १, पावन १।

CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust and eGangotri

प्रभाकर वंश-का इतिहास

पावन के पुत्र १, वंशीधर १।

वंशीधर के पुत्र १, हरिराम १।

हरिराम के पुत्र १, दयासिन्धु १।

दयासिन्धु के पुत्र १, सीताराम १।

सीताराम के पुत्र १ ' विश्वनाथ १।

विश्वनाथ के पुत्र १, समाधान १।

समाधान के पुत्र १, कमल १।

कमल के पुत्र १, सत्यासिन्धु १।

सत्यासिन्धु के पुत्र १, गदाधर १।

गदाधर के पुत्र ३, कंदर्प १, सिताव २, वच्चूलाल ३।

CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust Foundation Research Academy Gangotri

दुर्वल पाठक-वंश वर्णन

छिताव के पुत्र २, वृजलाल १, पतिराखन २।

वृजलाल

यह स्थान - ज्ञानापुर प्रान्त - उन्नाव से स्थान - मौरांव - प्रान्त - उन्नाव गये, और मौरांवे के पाठक प्रसिद्ध हुए।

पतिराखन

यह स्थान - ज्ञानापुर ~~से~~ प्रान्त - उन्नाव से स्थान शाहाबाद प्रान्त - हरदोई गये, और शाहाबादी पाठक प्रसिद्ध हुए।

वच्चूलाल

यह स्थान - ज्ञानापुर प्रान्त - उन्नाव से स्थान - अंगाई - प्रान्त - . . . गये, और अंगाई के पाठक प्रसिद्ध हुए। यह बहुत प्रतिष्ठित और प्रतापी हुए।

https://archive.org/details/muthulakshmiacademy Bhavan Trust, Lucknow

प्रभाकर वंश-का इतिहास

CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust and eGangotri

उद्याम के चतुर्थ पुत्र शुचि द्विवेदी के पुत्र १, गदाधर १।

गदाधर के पुत्र १, गिरिधर कवि १।

गिरिधर कवि के पुत्र १, सुधाकर १।

सुधाकर के पुत्र १, जगन्नाथ १।

जगन्नाथ के पुत्र १, देवनाथ १।

देवनाथ के पुत्र २, ऋषिनाथ १।

ऋषिनाथ के पुत्र १, निश्चल १।

निश्चल के पुत्र १, मानधर १।

मानधर के पुत्र १, विहारि (द्विवेदी पसिगवां) १।

विहारि के पुत्र १, मित्रानन्द १।

मित्रानन्द के पुत्र १, प्रभाकर १।

प्रभाकर के पुत्र २, रूपई (द्विवेदी भैंसई) १,

धलई (दीक्षित पहुज्पा) २।

रूपई के पुत्र १, कवितांडव (द्विवेदी विष्णुपुर) १।

कवितांडव के पुत्र २, देवराज (द्विवेदी जाजमऊ)

Bhavan Vani Trust, Lucknow

शुचि द्विवेदी - वंश वर्णन

उद्दाम के चतुर्थ पुत्र शुचि द्विवेदी के पुत्र १, गदाधर १।

गदाधर के पुत्र १, गिरिधर कवि १।

गिरिधर कवि के पुत्र १, सुधाकर १।

सुधाकर के पुत्र १, जगन्नाथ १।

जगन्नाथ के पुत्र १, देवनाथ १।

देवनाथ के पुत्र २, ऋषिनाथ १।

ऋषिनाथ के पुत्र १, निश्चल १।

निश्चल के पुत्र १, मानधर १।

मानधर के पुत्र १, विहारि (द्विवेदी पसिगवां) १।

विहारि के पुत्र १, मित्रानन्द १।

मित्रानन्द के पुत्र १, प्रभाकर १।

प्रभाकर के पुत्र २, रूपई (द्विवेदी मैंसई) १,

घलई (दीक्षित पहुज्पा) २।

रूपई के पुत्र १, कवितांडव (द्विवेदी विष्णुपुर) १।

कवितांडव के पुत्र २, देवराज (द्विवेदी जाजमऊ)

CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust and eGangotri

प्रभाकर वंश का इतिहास

१, कला (द्विवेदी कन्नौज) २।

देवराज के पुत्र ४, घारवास (द्विवेदी नरोत्तमपुर) १, वासुदेव (द्विवेदी केसरमऊ) २, जनार्दन (अग्निहोत्री रिवाड़ी) ३, वाल्मीक (दीक्षित ख्योरा) ४।

घारवास के पुत्र ३, चन्द्रमणि (द्विवेदी इटावा-घारवास के) १, मनऊं (द्विवेदी नरोत्तमपुर) २, घनश्याम (द्विवेदी इटावा घारवास) ३।

चन्द्रमणि और घनश्याम विशेष प्रसिद्ध हुए।

मनऊं के पुत्र २, नरोत्तम (द्विवेदी मैंसई) १, जगत (द्विवेदी चिलौली) २।

नरोत्तम के पुत्र ३, वसई (सपई में वसे और मैंसई के द्विवेदी कहलाये) १, जानकी (सपई में वसे और मैंसई के द्विवेदी कहलाये) २, वावू (सपई में वसे और मैंसई के द्विवेदी कह-

CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Foundation Trust and Academy, Gangotri

प्राचि द्विवेदी- वंश वर्णन

लाये) ३।

वावू के पुत्र १, वल्लू १

वल्लू के पुत्र ३, चन्द्र (द्विवेदी विलवार) १, वद्री-(द्विवेदी विलवार) २, मकरन्द (द्विवेदी भोजपुर) ३।

वद्री के पुत्र १, सेवकी (द्विवेदी उन्नाव) १।

सेवकी के पुत्र २, गोपाल (द्विवेदी पहेमा) १, भूपराम (द्विवेदी वहन्पा) २।

गोपाल के पुत्र ४, जगवंशी १, रघुवंशी २ परिवर (अवस्थी विलौरा) यमराज (दरियावादी मिश्र) ४।

https://archive.org/details/Bhuvan Vani Trust, Lucknow

CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust, Lucknow / Muthulakshmi Research Academy

~ जगवंशी रघुवंशी ~

यह विशेष प्रसिद्ध हुए। और यह स्थान -
आमीपुर प्रान्त — ·के अवस्थी वि-
ख्यात हुए।

जनार्दन के पुत्र २, मतिकर (अग्निहोत्री अग्) १, चंदन (अग्निहोत्री उज्जैन) २।

वाल्मीक के पुत्र २, शान्ति (दरियाबादी दीक्षित) १, संतोष (नैमिषारण्य दीक्षित) २।

कला के पुत्र २, कुन्दन (द्विवेदी कचिया) १, अमई (द्विवेदी नरोत्तमपुर) २।

CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri